

"आदिवासी समाज की समस्याएं 'काला पादरी' उपन्यास के संदर्भ में"

डॉ. रीना निलेश खिचडे

महैसाल महाविद्यालय, महैसाल

तह. मिरज, जिला. - सांगली।

भ्र. ध्वनी. - +९१ ९१७५५७९५२०.

सारांश :

हिंदी उपन्यास कारों की दृष्टि से आदिवासी समुदाय धरती के मूल निवासी है। किंतु उन्हें उपेक्षितों का जीवन जीना पड़ रहा है। उन्हें हमारी समाज व्यवस्था ने आज भी जंगलों में रहने के लिए बाध्य किया है। उन तक मूलभूत सुविधाएं भी अभी तक नहीं पहुंच पाई है। "वास्तव में 'काला पादरी' उपन्यास में भारत के सर्वाधिक उत्पीड़ित व उपेक्षित आदिवासियों की जीवन स्थितियों के अनेक पहलुओं को लेखक ने समाजशास्त्रीय दृष्टि, किंतु साथ ही लेखकीय संवेदना से इस ढंग से चित्रित किया है कि भारतीय समाज की जटिलता भी उभर कर सामने आती है और साथ ही आदिवासियों के जीवन की पीड़ा का मार्मिक अंकन भी लेखक की कलम से होता चलता है।

बीज शब्द: आदिवासी, समुदाय, गांव, समस्या

आज हर एक व्यक्ति, समाज संघर्षों एवं समस्याओं से घिरा हुआ है। सभी के जीवन में समस्याओं का रूप अलग-अलग होता है। उसी प्रकार आदिवासी समाज की भी अपनी समस्याएं हैं, संघर्ष है। जिन्हें 'काला पादरी' उपन्यास में यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया गया है। सन २००२ में तेजिंदर द्वारा लिखा 'काला पादरी' यह उपन्यास मध्यप्रदेश के सरगुजा अंचल के आदिवासियों के साथ घटित घटनाओं को पूरी मार्मिकता एवं जीवंतता के साथ उभारने की कोशिश करता है। काला पादरी में जेम्स खाखा के अंतर्मन की संवेदनाओं को भी स्पष्ट करता है। साथ ही सरगुजा जिले की भोली, अनपढ़ और गरीब आदिवासी जनता का धर्म के ठेकेदारों के द्वारा परिस्थिति वश धर्मांतरण करना, सरकारी व्यवस्था तंत्र अर्थात् बैंक के द्वारा उनके काम के लिए बार-बार ठोकर खाना, अकाल के कारण भूख से मरने वाले लोगों के साथ धर्म के आधार पर बर्ताव किया जाना आदि उपन्यास की मूल समस्याएं हैं। सरकारी व्यवस्था द्वारा आदिवासी समाज का कल्याण करने की जगह उनको उनके अधिकारों से, लाभों से वंचित कर दिया जाता है।

हिंदी उपन्यास कारों की दृष्टि से आदिवासी समुदाय धरती के मूल निवासी है। किंतु उन्हें उपेक्षितों का जीवन जीना पड़ रहा है। उन्हें हमारी समाज व्यवस्था ने आज भी जंगलों में रहने के लिए बाध्य किया है। उन तक मूलभूत सुविधाएं भी अभी तक नहीं पहुंच पाई है। "वास्तव में 'काला पादरी' उपन्यास में भारत के सर्वाधिक उत्पीड़ित व उपेक्षित आदिवासियों की जीवन स्थितियों के अनेक पहलुओं को लेखक ने समाजशास्त्रीय दृष्टि, किंतु साथ ही लेखकीय संवेदना से इस ढंग से चित्रित किया है कि भारतीय समाज की जटिलता भी उभर कर सामने आती है और साथ ही आदिवासियों के जीवन की पीड़ा का मार्मिक अंकन भी लेखक की कलम से होता चलता है।" स्पष्ट है आदिवासियों के जीवन की पीड़ा एवं समस्याओं को लेखक हमारे सामने रखने की कोशिश करता है। प्रस्तुत उपन्यास में अनेक समस्याएं हमारे सामने आती हैं जो इस प्रकार हैं -

1. भूख की समस्या-

इस उपन्यास में आदिवासी समाज के भूख की समस्या को स्पष्ट रूप से हमारे सामने रखा गया है। मध्यप्रदेश में घोर अकाल पड़ने के कारण भुखमरी की समस्या निर्माण हो गई थी। वहां पहले से ही गरीबी और आदिवासी होने के कारण उनकी स्थिति बद से बदतर हो गई है। भूख के कारण कई लोगों की जान भी चली गई है। बीजापुर, अंबिकापुर जैसे गांव में मरे हुए लोगों की शिकायत भी दर्ज की गई है। एक बूढ़ा व्यक्ति कहता है कि, उनकी बहू की मृत्यु भूख के कारण हो गई है तथा उसके कुछ दिन पहले उसके बेटे की भी मृत्यु हो गई है। कितनी दरिद्रता और भयावहता भरी हुई है यहां के आदिवासी लोगों में। उपन्यास में भुखमरी के संदर्भ में बताया गया है कि - "इस क्षेत्र के आदिवासी पिछले कई दिनों से जहरीली जंगली बूटियां खा रहे हैं और जिले के भितरी इलाकों में तो कुछ लोग अपनी भूख मिटाने के लिए बिल्लियों और बंदरों का शिकार कर, उनका मांस खा रहे हैं।"^१

इन गांवों में इस प्रकार अकाल छाया हुआ है कि वहां के आदिवासी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि, उनके गांव में हाथी आए और उनके घरों-झोपड़ियों को तोड़फोड़ कर तहस-नहस मचा दे। ताकि, सरकार की ओर से उसके बदले में उन्हें घर बनाने के लिए सामान और कुछ पैसे मिले। जिन पैसों से वह खाने का सामान और अनाज खरीद सके। इतना ही नहीं, वह आदिवासी लोग गांव में बसे सेठ गोयल के वहां चावल के गोदामों से चोरी करते हैं और पकड़े जाने पर अपना गुनाह कबूल भी करते हैं। 'भूख का कोई धर्म नहीं होता' जेम्स खाखा का यह कथन हमें सच से अवगत कर देता है।

2. धर्मांतरण की समस्या-

धर्मांतरण की समस्या इस उपन्यास की दूसरी सबसे बड़ी समस्या है। धर्म के ठेकेदार अपने धर्म का विस्तार करने एवं प्रभाव बनाने हेतु आदिवासियों को अपना शिकार बनाते हैं। उपन्यास में आदिवासी समाज धर्म के लोगों के बीच अपना अस्तित्व खो बैठता नजर आता है। एक तरफ ईसाई मिशनरी हिंदुओं को ईसाई बना रहे हैं तो दूसरी ओर हिंदू संगठन इसाई यों को हिंदू बना रहे हैं। इन दोनों के बीच आदिवासी समाज अपना अस्तित्व खो रहा है। जेम्स खाखा के दादा भी आदिवासी थे। जिनका पूरा परिवार भूख के कारण तड़प रहा था तब ईसाई मिशनरी ने इन्हें धर्म बदल कर खाने-पीने का सामान दिया उन्हें जीने के काबिल बनाया इस प्रकार आदिवासियों को खाने का लालच दिखाकर धर्म परिवर्तन होता था। जब जेम्स खाखा को यह पता चलता है तब वह अपने फादर मैथ्यूज से कहता है - " क्या यह सच नहीं कि हमारी इमेजेज में पहाड़ थे, नदियां थी, पेड़ थे, चीते थे, और राजा ने हमें बंधुआ बना दिया, फिजिकली और इकोनॉमिकली एक्सप्लॉइट किया, लेकिन आपने क्या किया? यू रादर टेम्ड अस, आपने हमें पालतू बना दिया, हमारे लिए हिंदू फंडामेंटलिस्टों और आप में अब कोई खास फर्क नहीं है। सारी इमेजेज छीन ली आप लोगों ने....,"³ स्पष्ट है आदिवासियों को अपना अस्तित्व खोना पड़ा।

धर्म के नाम पर होने वाले हिंसाचार को रोकने के लिए जेम्स 'बिशप स्वामी' जो उनके इष्ट थे उनसे बात करता है। वह बिशप स्वामी को भूखे लोगों को चावल बांटने के लिए कहता है किंतु इसका विरोध करते हुए बिशप कहता है कि सिर्फ अपने धर्म के भूखे लोगों को ही यह खाना मिलेगा। अगर वह हमारा धर्म मानेंगे तभी उनको खाना दिया जाएगा। इस देश को बाजार कह कर यहां सपने पूरे करना ही अपना लक्ष्य है यह बात वह जेम्स को समझाता है। आगे वह कहता है हमें सिर्फ धर्म का प्रचार करना है किसी भी तरीके से लोगों को धर्म बदलने पर मजबूर करना है और इसके लिए कुछ लोग भूख से मर जाते हैं तो वह प्रभु की इच्छा। साथ ही वह कहता है " मतलब यह कि हमारे सामने मुख्य बात सत्ता का विश्वास हासिल करना है, चावल बांटना नहीं, चावल खरीदे जाते हैं या बेचे जाते हैं, बाटे नहीं जाते....!"⁴ स्पष्ट है यहां लोगों की मजबूरी का फायदा उठाया जाता है। बाजार वृत्ति का नजारा यहां स्पष्ट दिखाई देता है।

3. भ्रष्टाचार और शोषण की समस्या –

सरकारी व्यवस्थाओं का खोखलापन लेखक ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है। सरकारी व्यवस्था भी इन लोगों के साथ अनैतिक व्यवहार करता है। भ्रष्टाचार एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। भ्रष्टाचार एक ऐसा दीमक है जो अंदर ही अंदर भारत देश को खोकला कर रहा है। उपन्यास का नायक सेंट्रल बैंक में काम करता है। उसका तबादला भोपाल से अंबिकापुर हुआ है। बैंक के भ्रष्ट कारोबार के बारे में बताते हुए वह कहता है- " बैंक के कारोबार में भी कमीशन तय होते थे। मेरे साथ जो तीन और अफसर थे - हैदरी, महाजन और बैनर्जी तीनों से ही मुझे काफी सख्त हिदायतें सुननी पड़ती थीं। इनमें काम की हिदायत सिर्फ एक थी कि मुझे जो करना है और जहां जाकर मरना है, मैं वहां चला जाऊं, लेकिन कम से कम चुप रहूं। मेरा चुप रहना उनके लिए बहुत मायने रखता था और मैं चुप रहा करता था।"⁵ कभी-कभी लेखक इस बात से परेशान होता था, तो ब्रांच मैनेजर से बात करने की कोशिश करता पर वह भी इन से मिला हुआ था। वह कहता " बस पान चबाते रहिए और चुपचाप देखते रहिए, पान खाने से होता यह है कि आपको लगता है आप बिना किसी कारण के ही चुप नहीं है"⁶ इससे स्पष्ट है कि लेखक भी इसी भ्रष्ट कारोबार का हिस्सा बना है जो ना चाहते हुए भी इसे बनना पड़ा है।

सरकार गरीबों के लिए नई-नई योजनाएं बनाता है। पर असल में इसका फायदा किसे होता है? यह सोचने की बात है। इस उपन्यास में कुआं तैयार करने के लिए जो बिल पास किया जाता है उसमें भी किस प्रकार भ्रष्टाचार किया जाता है इस संदर्भ में नायक बताता है - " ईट के भट्टे वाले से लेन-देन का हिसाब तय करने के बाद व्यापारी सत्रह हजार चारसौ आठ रूपए की जगह हो चौबीस हजार आठसौ नब्बे रूपए का बिल तैयार करता है और सात हजार चारसौ बयासी रूपए का बटवारा हो जाता है।"⁷ इस प्रकार ग्राम सेवक, पटवारी, व्यापारी, बैंक अफसर और ब्रांच मैनेजर तक सभी व्यक्ति भ्रष्टाचार करते हुए नजर आते हैं। इस प्रकार सरकारी कर्मचारियों द्वारा आदिवासी लोगों तक सुविधाएं पहुंचती ही नहीं उन सुविधाओं में भी यह कर्मचारी अपना फायदा देखते हैं।

4. राजनैतिक समस्या-

सरगुजा के स्थानीय आदिवासियों की समस्या का कारण मौजूदा राजनीतिक चरित्र भी है। अखबारों में राज्य के मुख्यमंत्री आदिवासियों की संस्कृति के गर्व की बात करते हुए उनके विकास की बात करते नजर आते हैं। इस पर जेम्स खाखा राजनीति पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं -" जेम्स ने अखबार वापस मेज पर रख दिया और हंसते हुए कहा," दीदी, देखो इन पॉलीटिशियंस को इन्हें अपने आदिवासियों की संस्कृति पर गर्व होता है, जबकि इन्हें शर्म आनी चाहिए कि वह आज भी नंगे रहते हैं!"⁸ मध्यप्रदेश के

सरगुजा जिले के वर्णन में बताया गया है कि अकाल के समय में आदिवासियों को किसी की भी मदद नहीं मिली न सरकार की तरफ से ना चर्च की तरफ से।

5. अशिक्षा और अंधविश्वास की समस्या-

सरगुजा जिले के महेशपुर गांव का चित्रण उपन्यास में किया गया है। महेशपुर गांव में अशिक्षित की संख्या स्त्रियों में अधिक है। बाईस तेईस साल की लड़कियों में अपने देह के प्रति भी जागरूकता दिखाई नहीं देती। महेशपुर गांव के लोग अपने सरपंच के बारे में भी कुछ नहीं जानते यह उनकी अज्ञानता ही है। " कभी-कभी तो होता यह है कि किसान सिर्फ अंगूठा लगाता है और उसके बारे में सारी जानकारी ग्राम सेवक द्वारा भर दी जाती है।" स्पष्ट है आदिवासी लोग अशिक्षित हैं।

यह अंचल शुरू से ही उपेक्षा, गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, बदहाली, अंधश्रद्धा से पूरी तरह घिरा हुआ है। अशिक्षा के कारण लोग भयानक रूढ़ियों से जकड़े हुए हैं, ये रूढ़ियां जिन्हें वहां के लोग परंपरा मानते हैं, इतने भयानक एवं दर्दनाक है कि किसी को भी विचलित कर सकते हैं। उपन्यास के एक दृश्य में एक आदमी छः दिन से भूखा है, उसे खाना देने के बजाय उस भूखे व्यक्ति को गांव के चौराहे में लिटा दिया जाता है यह कहकर की उस पर प्रेतात्मा का साया है और बैगा द्वारा उसके शरीर पर अमानवीय यातनाएं दी जाती है। गांव के लोगों का विश्वास है कि अगर वह व्यक्ति उठ गया तो प्रेतात्मा से मुक्त हो जाएगा अन्यथा ना उठने पर वह पापी कहलाएगा। इस पर आदित्य पाल द्वारा जेम्स खाखा को किया गया प्रश्न पाठकों को स्तब्ध कर देता है की भूख क्या प्रेत होती है? स्पष्ट है अशिक्षा और अंधविश्वास ने उणे पूरी तरह से जकड़ लिया है। साथ ही यहां के आदिवासी लोग मरे हुए लोगों के शरीर को जमीन के अंदर गड्ढा खोदकर दफना देते हैं और उस पर नीम का पेड़ लगा देते हैं। ताकि उसकी दुष्ट प्रेतात्मा आसानी से बाहर ना निकल पाए।

6. आर्थिक स्थिति की समस्या –

जंगल में रहने के कारण आदिवासी लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। बरसात की कमी के कारण अकाल पडता था और निर्वाह करना भी उनके लिए कठिन हो जाता था। उपन्यासकार ने आदिवासियों की दशा का इस प्रकार वर्णन किया है कि, निम्न वर्ग की गरीबी का प्रत्यक्ष रूप हमारे सामने दिखाई देने लगता है। उस क्षेत्र की एक लड़की ने बालों में लाल रंग का 'गंदा' सा रिबन बांध रखा है। यहां 'गंदा' शब्द गरीबी का बोध ही कराता है। " गांव की पुरुष और स्त्रियां दोनों एक जैसी धोतिया पहना करते बच्चे नंगे रहते, थोड़ा बड़े होते तो मां - बाप की पिछले साल की धोतिया वे भी अपने ऊपर ओढ़ लेते।"°

सरगुजा जिले के आदिवासी बच्चे आर्थिक तंगी के कारण रेलगाड़ी से माल चुराते हैं। यह बच्चे चलती ट्रेन पर चढ़कर माल नीचे गिरा देते। छोटे होने के बावजूद अपने निर्वाह के लिए यह बच्चे अपनी जान पर खेल जाते हैं। आदिवासी समाज की आर्थिक स्थिति बहुत ही बिकट है।

निष्कर्ष:-

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि यह उपन्यास मध्यप्रदेश के सरगुजा इलाके में बसे आदिवासी समाज का लेखा-जोखा हमारे सामने उजागर करता है। हिंदी उपन्यास कारों की दृष्टि से आदिवासी समुदाय धरती के मूल निवासी हैं किंतु उन्हें उपेक्षितों का जीवन जीना पड़ रहा है। उन्हें हमारी समाज व्यवस्था ने आज भी जंगलों में रहने के लिए बाध्य किया है। अकाल के कारण सरगुजा जिले में भूख की समस्या उभरी है। भूखमरी ने इस आदिवासी समाज को पूरी तरह से अपनी चपेट में ले लिया है। इसका फायदा ईसाई मिशनरी और हिंदू संगठन उठा रहे हैं। इन दोनों के बीच आदिवासी समाज अपना अस्तित्व खो रहा है। खाने का लालच दिखाकर धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। सरकारी व्यवस्थाओं का खोखला पन लेखक ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है। सरकारी योजनाओं को आदिवासी समाज तक पहुंचाया ही नहीं जा रहा था। योजनाओं के नाम पर सरकारी अफसर अपनी जेब भरते नजर आते हैं। स्थानीय आदिवासियों की समस्या का कारण मौजूदा राजनीतिक परिस्थिति भी है। अकाल के समय आदिवासियों को किसी की भी मदद नहीं मिली। अशिक्षा के कारण आदिवासी लोग भयानक रूढ़ियों में जकड़े हुए हैं, ये रूढ़ियां जिन्हें वहां के लोग परंपरा मानते हैं वह बहुत भयानक एवं दर्दनाक हैं। अंधविश्वास ने उन्हें पूरी तरह से जकड़ लिया है। जंगल में रहने के कारण और बरसात की कमी के कारण यह लोग आर्थिक तंगी से भी गुजर रहे हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि अकाल, भूख, शोषण, धर्मांतरण, निरक्षरता, अंधविश्वास और गरीबी जैसी समस्याओं से आदिवासी समाज जूझ रहा है। लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से आदिवासियों की स्थितियों से हमें अवगत कर विचार करने पर मजबूर कर दिया है कि सचमुच हम विकसनशील देश की संकल्पना को न्याय दे सकते हैं?

संदर्भ-

1. प्रो. चमनलाल; दलित साहित्य: एक मूल्यांकन, पृष्ठ. १६६
2. तेजिंदर, काला पादरी; नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस ; प्र.सं. २००२, पृ. २१
3. वही. पृ. ४५
4. वही पृ. १२४
5. वही पृ. ११
6. वही पृ. ११
7. वही पृ. १३
8. वही पृ. १०१
9. वही पृ. १३
10. वही पृ. ७०